खण्ड-219, अंक-8
मंगलवार, 16 फाल्गुन, शक संवत् 1882
(7 मार्च, 1961 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 219 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६२

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, ७ मार्च, १९६१

विधान सभा की बैठक सभा-मण्डप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री आत्माराम गोविन्द खेर, की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य—३०२

अक्षयवरसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनन्तराम वर्मा, श्री
अब्दुल लतीफ़ नोमानी, श्री
अब्दुस्समी, श्री
अभयराम यादव, श्री
अमरनाथ, श्री
अमोलादेवी, श्रीमती
अयोध्याप्रसाद आर्य, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधेशकुमार सिनहा, डाक्टर
अहमद बख्श, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
इस्तफ़ा हुसैन, श्री
उमाशंकर शुक्ल, श्री
उल्फ़तसिंह, श्री
ऊदल, श्री
एस० अहमद हसन, श्री
ओंकारनाथ, श्री
कन्हैयालाल वाल्मीकि, श्री
कमलकुमारी गोईदी, कुमारी
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कमलेशचन्द्र, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री
कल्याणराय, श्री
कामताप्रसाद विद्यार्थी, श्री
कालीचरण अग्रवाल, श्री
किशनसिंह, श्री
कुंवरकृष्ण वर्मा, श्री
कृपाशंकर, श्री
केशव पांडेय, श्री
कशवराम, श्री
कैलाशनारायण गुप्त, श्री
कैलाशवती, श्रीमती
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खजानसिंह चौधरी, श्री
खमानीसिंह, डाक्टर
खयालीराम, श्री
गंगाधर जाटव, श्री
गंगाप्रसाद सिंह, श्री
गजेन्द्रसिंह, श्री
गज्जूराम, श्री
गणेशप्रसाद पांडेय, श्री
गनेशचन्द्र काछी, श्री
गयाबख्श, श्री
गरीबदास, श्री
गुरुप्रसाद सिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीकृष्ण आजाद, श्री
गोविन्दसहाय, श्री
गौरीराम गुप्त, श्री
गौरीशंकरराय, श्री
घनश्याम डिमरी, श्री
घासीराम, जाटव, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रबली शास्त्री ब्रह्मचारी, श्री
चन्द्रहास मिश्र, श्री
चन्द्रावती, श्रीमती
चन्द्रिकाप्रसाद, श्री
चित्तरसिंह निरंजन, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
छेदीलाल, श्री

जंगबहादुर वर्मा, श्री
जगदीशनारायण, श्री
जगदीशनारायणदत्तसिंह, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ लहरी, श्री
जगपतिसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जयगोपाल, डाक्टर
जयदेवसिंह आर्य, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जवाहरलाल, श्री
जवाहरलाल रोहतगी, डाक्टर
जागेश्वर, श्री
जुगलकिशोर, आचार्य
जोखई, श्री
ज्वालाप्रसाद कुरील, श्री
झारखंडेराय, श्री
टम्बरेश्वर प्रसाद, श्री
टीकाराम, श्री
टीकाराम पुजारी, श्री
डूंगरसिंह, श्री
ताराचन्द माहेश्वरी, श्री
तारादेवी, डाक्टर
तेजबहादुर, श्री
तेजसिंह, श्री
त्रिलोकीसिंह, श्री
दत्त०, श्री एस० जी०
दशरथप्रसाद, श्री
दाताराम चौधरी, श्री
दीनदयालु करुण श्री
दीनदयालु शास्त्री, श्री
दीपनारायणमणि त्रिपाठी, श्री
देवदत्तसिंह, श्री
देवनारायण भारतीय, श्री
देवराम, श्री
द्वारिकाप्रसाद, श्री (फर्रुखाबाद)
द्वारिकाप्रसाद पांडेय, श्री (गोरखपुर)
धनीराम, श्री
धरणीधर पांडेय, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नन्दराम श्री
नरेन्द्रसिंह भंडारी, श्री
नवलकिशोर, श्री
नागेश्वरप्रसाद, श्री
नारायणदत्त तिवारी, श्री
नारायणदास पासी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
पब्बरराम, श्री
परमानन्द सिनहा, श्री
परमेश्वरदीन वर्मा, श्री
पहलवानसिंह चौधरी, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रतापबहादुरसिंह, श्री
प्रतापभानप्रकाशसिंह, श्री
प्रतापसिंह, श्री
प्रभावती मिश्र, श्रीमती
प्रभुदयाल, श्री
बलदेवसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
वसंतलाल, श्री
बादामसिंह, श्री
बाबूराम, श्री
बाबूलाल कुसुमेश, श्री
बालकराम, श्री
बिन्दुमती दास, श्रीमती
विशम्बरसिंह, श्री
बुद्धूसिंह, श्री
बुलाकीराम, श्री
बृजबासीलाल, श्री
बृजरानी मिश्र, श्रीमती
बेचनराम, श्री
बेचनराम गुप्त, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजूराम, श्री
ब्रजनारायण तिवारी, श्री
ब्रजभूषणशरण, श्री
ब्रह्मदत्त दीक्षित, श्री
भगवतीप्रसाद दुबे, श्री
भगवतीप्रसाद शुक्ल, श्री
भगवतीसिंह विशारद, श्री
भगौतीप्रसाद वर्मा, श्री
भजनलाल, श्री
भीखालाल, श्री
भीमसेन, श्री
भूपकिशोर, श्री
मंजूरुलनबी, श्री
मथुराप्रसाद पांडेय, श्री

मदनगोपाल वैद्य, श्री
मन्नालाल, श्री
मलिखार्नासिंह, श्री (मैनपुरी)
महमूद अली खां, श्री (सहारनपुर)
महमूद हुसैन खां, श्री
महावीरप्रसाद शुक्ल, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मिहरबानसिंह, श्री
मुकुटविहारीलाल अग्रवाल, श्री
मुक्तिनाथराय, श्री
मुजफ्फरहसन, श्री
मुबारक अली खां, श्री
मुरलीधर, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुल्लाप्रसाद 'हंस', श्री
मुहम्मद सुलेमान अधमी, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मूलचन्द, श्री
मोतीलाल अवस्थी, श्री
मोहनलाल, श्री
मोहनलाल गौतम, श्री
मोहनसिंह मेहता, श्री
यमुनाप्रसाद शुक्ल, श्री
यमुनासिंह, श्री (गाजीपुर)
यशोदादेवी, श्रीमती
रऊफ जाफरी, श्री
रघुनाथसहाय यादव, श्री
रघुवीरराम, श्री
रघुवीरसिंह, श्री (एटा)
रघुवीरसिंह, श्री (मेरठ)
रमाकांतसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजकिशोर राव, श्री
राजदेव उपाध्याय, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजबिहारीसिंह, श्री
राजाराम शर्मा, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी, श्रीमती
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
रामधार तिवारी, श्री

रामअभिलाख, श्री
रामकिंकर, श्री
राम कुमार वैद्य, श्री
रामकृष्ण सारस्वत, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामजीसहाय, श्री
रामदास आर्य, श्री
रामदीन, श्री
रामदुलारे मिश्र, श्री
रामनारायण त्रिपाठी, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामप्रसाद, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली, श्री
राममूर्ति, श्री
रामरतनप्रसाद, श्री
रामरतीदेवी, श्रीमती
रामलक्षण तिवारी, श्री
रामलखन, श्री (वाराणसी)
रामलखन मिश्र, श्री
रामलखनसिंह, श्री (जौनपुर)
रामलाल, श्री
रामवचन यादव, श्री
रामशरण यादव, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह चौहान वैद्य, श्री
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामायणराय, श्री
रामेश्वर प्रसाद, श्री
रूमसिंह, श्री
लक्ष्मणराव कदम, श्री
लखमीसिंह, श्री
लालबहादुर, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री
लुत्फअली खां, श्री
लोकनाथसिंह, श्री
बजरंगबिहारीलाल रावत, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नक़वी, श्री
वासुदेव दीक्षित, श्री
विचित्र नारायण शर्मा, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विद्यावती वाजपेयी, श्रीमती
[illegible]

विशालसिंह, श्री
वीरेन्द्रशाह, राजा
व्रजविहारी मेहरोत्रा, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुंतलादेवी, श्रीमती
शब्बीर हसन, श्री
शमसुल इस्लाम, श्री
शम्भुदयाल, श्री
शांतिप्रपन्न शर्मा, श्री
शिवगोपाल तिवारी, श्री
शिवप्रसाद, श्री (देवरिया)
शिवप्रसाद नागर, श्री (खीरी)
शिवमूर्ति, श्री
शिवराजबलीसिंह, श्री
शिवराजबहादुर, श्री
शिवराम, श्री
शिवराम पांडेय, श्री
शिवबचन राव, श्री
शिवशंकरसिंह, श्री
शिवशरणलाल श्रीवास्तव, श्री
शीतलाप्रसाद, श्री
शोभनाथ, श्री
श्याममनोहर मिश्र, श्री
श्यामलाल, श्री
श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, श्री
श्रीनाथ, श्री (आजमगढ़)
श्रीनाथ भार्गव, श्री (मथुरा)
श्रीपालसिंह, कुंवर
संग्रामसिंह, श्री
सईद अहमद अन्सारी, श्री
सजीवनलाल, श्री
सत्यवतीदेवी रावल, श्रीमती
सरस्वतीदेवी शुक्ल, श्रीमती
सियादुलारी, श्रीमती
सीताराम, डाक्टर
सीताराम शुक्ल, श्री
सुखरानीदेवी, श्रीमती
सुखरामदास, श्री
सुखीराम भारतीय, श्री
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुनीता चौहान, श्रीमती
सुन्दरलाल, श्री
सुरथबहादुरशाह, श्री
सुरेन्द्रदत्त वाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रसिंह, राजकुमार
सुरेशप्रकाशसिंह, श्री
सुल्तान आलम खां, श्री
सूर्यबली पांडेय, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीदुल्ला खां, श्री
हरदयालसिंह, श्री
हरदयालसिंह पिपल, श्री
हरदेवसिंह, श्री
हरिश्चन्द्रसिंह, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन (राहत मौलाई), श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—मुख्य मंत्री, श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्रममंत्री, श्रीमती सुचेता कृपलानी, तथा वनमंत्री, श्री अलगूराय शास्त्री भी उपस्थित थे।

पंडित गोविन्द वल्लभ पंत के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री चन्द्रभानु गुप्त)—अध्यक्ष महोदय, वह दुखद घटना जिसके विषय में कई दिवस से आशंका थी आज घटित हो गयी और उत्तर प्रदेश और इस देश का एक महान् नेता हमारे बीच से सदा के लिये उठ गया। मेरा तात्पर्य माननीय पंडित गोविन्द वल्लभ पंत के देहावसान से है। हम सब भलीभांति जानते हैं कि किस तरह से वह बीमारी की शय्या पर पड़े हुए थे और किस तरह से बावजूद आधुनिक विज्ञान के विभिन्न प्रयासों के वह हमारे बीच में नहीं रह सके।

पंडित गोविन्द वल्लभ पंत क्या थे, उन्होंने हमारे लिये क्या किया, देश के लिये क्या किया, प्रदेश के लिये क्या किया, यह तो ऐसी बातें हैं जो हमारे जीवन के समक्ष गुजरी हैं और हममें से प्रत्येक उनसे भलीभांति परिचित है। उन्होंने इस प्रदेश और देश की अपने जीवन में ५० वर्ष तक सेवा की और इस देश का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां उन्होंने अपने त्याग और बलिदान का

परिचय न दिया हो, अपनी बुद्धि का परिचय न दिया हो और अपने उन गुणों का परिचय न दिया हो जिन गुणों के द्वारा देशों का निर्माण होता है, नये समाज की रचना होती है, पद-दलितों का उद्धार होता है और नये विचारों का विकास होता है।

पंडित गोविन्द वल्लभ पंत विद्यार्थी जीवन से ही देशप्रेमी थे और देश के कार्यों में और उसकी समस्याओं के सुलझाने में वह विद्यार्थी जीवन से ही हिस्सा लेते थे। उन्होंने अपने जीवन को उन देश के नेताओं से सबक ले कर ढाला जो उस जमाने में देश का नेतृत्व करते थे और विचारों का नेतृत्व करते थे। मेरा तात्पर्य लोकमान्य बालगंगाधर तिलक से है, मेरा तात्पर्य गोखले जी से है, लाला लाजपतराय जी से है और विपिन चन्द्र पाल जी से है। उन नेताओं की जीवनी के पन्नों से असर लेकर उन्होंने सार्वजनिक जीवन में पदार्पण किया और १९१६ से बराबर इस संस्था के सदस्य बने रहे जिस संस्था ने देश को आजाद कराया, जिस संस्था ने देश की स्वतंत्रता के विचार दिये और जिस संस्था ने स्वतंत्रता के विचार देकर देश को आजाद कराया और उसके बाद आजादी के फलों को संगठित कर देश का ऐसा विधान बनाया जिसमें प्रत्येक बालिग को मत देने का अधिकार दिया गया और इस प्रकार एक नयी समाजवादी व्यवस्था लाने का बीड़ा इस महान् व्यक्ति ने अपने कंधों पर उठाया था। उस संस्था को ५० वर्ष तक इस नेता ने महान् बल दिया, विचार दिये और अपने संगठन की शक्ति द्वारा उसे देश के कोने-कोने तक फैलाया। कौन नहीं जानता उस कहानी को? इस प्रदेश में, गांधी जी के राजनीति में प्रादुर्भाव के बाद, अहिंसा और नान-कोआपरेशन की जो लड़ाई अंग्रेजी शासन से इस देश को मुक्त कराने के लिये लड़ी गयी और प्रारम्भ से ही उसने समय-समय पर जो पहलू लिये, पंडित गोविन्द वल्लभ पंत उन प्रमुख व्यक्तियों में से रहे जिन्होंने उन पहलुओं का नेतृत्व किया।

१९२३ में वे कांग्रेस के उस दल के नेता चुने गये जिस दल ने अंग्रेजी शासन से उस समय में कानून की तहत में अपने ढंगों से लड़ाई असेम्बली के अन्दर प्रारम्भ की और उन्होंने उस कार्य में जो क्षमता दिखायी वह भी पार्लियामेंटरी इतिहास में एक अनोखी वस्तु है। प्रदेश की असेम्बली या कौंसिल के सदस्य के नाते और उसके नेता के नाते जो उन्होंने कार्य किया वह प्रशंसनीय है। किसानों की समस्या को सुलझाने में उस समय जो कदम उन्होंने उठाया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। कांग्रेस दल के नेता के नाते, उन नवयुवकों के लिये, जो काकोरी षड्यन्त्र में पकड़े गये थे, अपनी वकालत द्वारा जो उन्होंने कार्य किया, उसको भी हम कभी नहीं भूल सकते। वे किस प्रकार नवयुवकों के लिये श्रद्धा रखते थे, जब नवयुवक किसी तकलीफ में और परेशानी में होते थे, उस समय वे किस प्रकार उनको सहायता देना चाहते थे, वे किस प्रकार सहायता देते थे, उसको कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे उत्तर प्रदेश के उन प्रमुख व्यक्तियों में से एक रहे हैं जिन्होंने समय-समय पर उन नये विचारों का नेतृत्व किया है, जिन्होंने प्रदेश में और देश में नयी भावनाओं को उत्पन्न किया है और नये ढंग से विदेशी शासन को अपने बीच से खत्म किया है।

वह कमीशन, जिसे साइमन कमीशन के नाम से हम पुकारते हैं, जिसे विदेशी सत्ता ने हमारे ऊपर लादा था और जो देशवासियों के विरोध करने के फलस्वरूप भी हमारे यहां आया, उसका किस प्रकार पंडित जवाहरलाल नेहरू और पंत जी ने विरोध किया उसे इस सदन का प्रत्येक सदस्य जानता है और उसकी भलीभांति जानकारी हम सब को है। मैं उन घटनाओं को दोहराना नहीं चाहता। वे घटनायें अत्यन्त ही घातक रही हैं और पंडित गोविन्द वल्लभ पंत के अन्दर उस समय क्या अभिलाषायें थीं, क्या आकांक्षायें थीं, उसको भी हम सब जानते थे और उन आकांक्षाओं तथा अभिलाषाओं की तहत में ही अपने जीवन की घड़ियों को वे व्यतीत करते थे। उन्होंने इसी नगरी में जब साइमन कमीशन आया तो नवयुवकों का नेतृत्व किया। वह तकलीफ में थे, अस्वस्थ थे, परन्तु इसी हजरतगंज में उन लाठियों की बौछार को सहा जिन लाठियों की बौछार ने उन्हें जीवन पर्यन्त वह शारीरिक तकलीफ दी जिसे वह हमेशा सहते रहे। जिस प्रकार से इसी नगरी में पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ उस साइमन कमीशन के बाईकाट में उन लाठियों की बौछार के बाद उन्होंने नये विचार देशवासियों के समक्ष प्रस्तुत किये उनसे देशवासियों के अन्दर एक नयी उमंग उत्पन्न हुई और उसने बहुतों को उस संस्था के अन्दर खींचा जिसने हमें,

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

जैसा कि मैंने पहले कहा, आजादी दिलाई और आजादी दिलाकर उसके कंसालिडेशन में बहुत भारी हिस्सा लिया।

१९३० और १९३२ के आन्दोलन इस प्रदेश में और देश में गांधी जी के नेतृत्व में संचालित किये गये। पंडित गोविन्द वल्लभ पंत उन आन्दोलनों में अगुवा रहे और अपनी विद्वता के कारण और उत्तम नेतृत्व के गुणों के कारण १९३१ में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य चुने गये और तब से बराबर वह कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य बने रहे। १९३३ में जब वे आन्दोलन खत्म हुये और १९३४ में फिर आल इंडिया कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन बम्बई में हुआ, उसमें जब यह निर्णय हुआ कि कांग्रेस को सेंट्रल असेम्बली के चुनाव में भाग लेना है और उस मोर्चे पर जाकर कार्य करना है तो उन एलेक्शन को लड़ने के लिये आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की तरफ से वह उस पार्लियामेंटरी बोर्ड के मुख्य मंत्री चुने गये और उन्होंने अपने नेतृत्व में उन चुनावों को लड़ा और कांग्रेस को विजय प्रदान करायी।

१९३७ में, जैसा हम और आप जानते हैं, वह इस प्रदेश के मुख्य मंत्री चुने गये और उन्होंने उस समय कांग्रेस का नेतृत्व कर के उन विचारों का विरोध किया जो उस समय जमींदारी प्रथा के मानने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा चलाये जा रहे थे और घोर विरोध के स्वरूप में उन्होंने एक भारी मत के साथ कांग्रेस को विजय दिलायी और विजय दिलाकर, जैसा मैंने अभी कहा, जब कौंसिल के सदस्य बने और उसमें कांग्रेस का बहुमत आया तो उसने उन्हें अपना नेता चुना और वह फिर इस प्रदेश के मुख्य मंत्री चुने गये। अपने मुख्य मंत्री रहने के कार्य-काल में जो कार्य उन्होंने उस समय किये, जो किसानों को सुभीता देने के कार्य किये वह चिरस्मरणीय रहेंगे। हम उन्हें भुला नहीं सकते। जब कि काकोरी के कैदी जेलखानों में बन्द थे, उनको छोड़ने का जब उन्होंने निर्णय लिया सरकार के मुख्य मंत्री के रूप में, तो जो एक कांस्टीट्यूशनल क्राइसेस अंग्रेजों और गवर्नर की तरफ से पेश हुआ उसका उन्होंने जिस बहादुरी के साथ मकाबला किया वह भी हमारे देश के इतिहास में कभी भुलाया नहीं जा सकता। अंग्रेजी हुकूमत नहीं चाहती थी कि काकोरी के क़ैदी छोड़े जायं, पन्त जी और उनकी सरकार चाहती थी कि वह कैदी छोड़ जायं, उन्होंने छोड़ने का आदेश भी दिया, लेकिन गवर्नर ने उनका विरोध किया और एक समस्या खड़ी हो गयी। वह समस्या उनको इस्तीफा देने तक मजबूर कर रही थी और उन्होंने अपना इस्तीफा भी दे दिया। गवर्नर को झुकना पड़ा, ब्रिटिश हुकूमत को झुकना पड़ा और उन कैदियों को छोड़ने के आदेश जो सरकार ने दिये थे वह मंजूर किये गये। मैं इस घटना को इसलिये इस सदन के समक्ष और अपने साथियों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं कि इससे भली-भांति यह पता चलता है कि वह घटना किस प्रकार की थी और वह किस तरह से उस जमाने में, जब चेम्सफोर्ड रिफार्म्स की तहत में अधिकार नहीं मिले थे, उन अधिकारों को देशवासियों को प्रदान कराना चाहते थे। जब सिविल डिसओबिडियन्स का सत्याग्रह आरम्भ हुआ उस समय यद्यपि वह अस्वस्थ थे फिर भी वह आन्दोलन में अगुवा रहे और जैसा कि हम जानते हैं कि सन् ४२ में जब वह कांग्रेस अधिवेशन में शामिल होने के लिये गये तो वहां पर गांधी जी और जवाहरलाल जी के साथ पकड़ लिये गये और तीन साल तक जेल में रहे। यद्यपि वहां पर वह अस्वस्थ रहे फिर भी अस्वस्थ रहते हुए उन्होंने बहादुरी के साथ जेल यातनायें बर्दाश्त कीं। वे ऐसी घटनायें हैं जो प्रत्येक को प्रेरणा प्रदान कर सकती हैं और आने वाली पीढ़ी और नवयुवकों को सबक दे सकती हैं।

उनका व्यवहार, उनके कार्य करने का तरीका और उनका सौम्य जीवन दूसरों को सबक देने वाला था। आज वे हमारे बीच से चले गये। उनके जाने से हमने अपने बीच से केवल देश का एक बड़ा राजनीतिज्ञ ही नहीं खो दिया परन्तु ऐसा व्यक्ति खो दिया जो सदा मुसीबतों में हमारा सहायक बन कर रहता था। वह हमेशा हमें मुसीबतों से निकालने की अभिलाषा रखते थे, दिक्कतों से हमें बाहर निकालते थे और अपनी वाणी से और अपने भाषण से लोगों को मुग्ध करते थे और विरोधियों को अपनी तरफ खींचते थे। वह पार्लियामेंटरी पद्धति में हमेशा उन गुणों का

साथ दिया करते थे जिनसे पार्लियामेन्टरी पद्धति विकसित होती है और नयी परम्परायें हमारे बीच में बनती हैं। वह गणतन्त्रीय परम्पराओं में अटूट विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे और कभी भी कोई ऐसा कार्य करने के लिये उद्यत नहीं होते थे जो गणतन्त्रीय परम्पराओं के विरुद्ध हो।

हम उनकी उन सेवाओं को भी नहीं भुला सकते जो उन्होंने प्रदेश के हरिजनों के प्रति अपनाईं और हम उनकी उन सेवाओं को भी नहीं भुला सकते जो उन्होंने इस प्रदेश के मुसलमानों के प्रति और उन व्यक्तियों के प्रति अपनाईं जो कि प्रदेश में अधिक संख्या में नहीं रहते हैं। सन् १९४७ के उस वातावरण को, उस आंधी को कौन भुला सकता है जिसने बहुत से प्रदेशों में लोगों को अन्धा बना दिया था, लोगों ने उन मानवीय गुणों को भुला दिया था कि मनुष्य को मनुष्य के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिये परन्तु पंडित पंत ने उस आंधी का मुकाबला बड़ी बहादुरी और क्षमता के साथ किया और हजारों मुसलमानों को उन्होंने बचाया। वह हिन्दू-मुसलमान एकता के पक्षपाती ही नहीं थे परन्तु ऐसा मानते थे कि बिना उसको स्थापित किये हुये हम अपनी आजादी को कायम नहीं रख सकते और न गणतंत्रीय परम्पराओं को ही अपने बीच में विकसित कर सकते हैं।

मैं, १९४५ के उस अवसर को भी नहीं भूला हूं, जब वर्किंग कमेटी की ओर से पंडित जी को मोहम्मद अली जिन्ना साहब से बातचीत करने के लिये शिमला भेजा गया था और भेजा इसलिये गया था कि पंडित जी में वह खूबी थी जिससे वे अपने विचारों को अपने ढंग से रख कर और उनके प्रभाव से अपने विरोधियों को भी अपने पक्ष का बनाने में समर्थ होते थ। वे गये और घंटों श्री मोहम्मद अली जिन्ना से उनकी बातचीत हुई, लेकिन वे सफल न हुये, परन्तु उनकी असफलता ने कभी उनको विचलित नहीं किया। उन्होंने सदा असफलताओं का मुकाबला किया और असफलताओं का मुकाबला करके देश को विजय के नजदीक लाने की चेष्टा की। उनका यह गुण हमें सदा स्मरणीय रहेगा, सदा दूसरों को प्रेरणा देने वाला और नवयुवकों को रास्ता बताने वाला होगा। भले ही वे हमारे बीच में न रहे हों, लेकिन उनके गुण हमें आगे ले चलने में सदा सहायता प्रदान करते रहेंगे।

उत्तर प्रदेश में मुख्य मंत्री के नाते १९४६ के बाद जो कार्य उन्होंने सम्पादित किये वे किस बात की घोषणा करते हैं, क्या वे यह नहीं बताते हैं कि जो पददलित था, जो उठना चाहता था, उसके लिये उनके हृदय में असीम व्यथा थी? जमींदारी उन्मूलन के कार्य की जिम्मेदारी उन्होंने अपने कंधे पर ओढ़ कर, अपने साथियों के सहयोग से उन्होंने जो कार्य इस उत्तर प्रदेश में किया, उस भारी कार्य ने इस प्रदेश के लाखों और करोड़ों किसानों को भारी प्रकाश दिया, नया जीवन दिया और उन जंजीरों से उन्हें मुक्त किया जो जमींदारी प्रथा के रूप में उन्हें न जाने कब से घेरे हुये थीं और जो उनको उभरने और उठने न देती थीं। उनका यह कार्य सिद्ध करता है कि वे कितने प्रगतिशील थे। आज इस प्रदेश के क्या ट्यूबवेल, क्या बांध, क्या स्कूल, क्या कालेज, क्या और दूसरी संस्थायें जो उन्होंने अपने मुख्य मंत्री के कार्यकाल में इस प्रदेश में रचीं, क्या वे इस बात का द्योतक नहीं हैं कि इस प्रदेश के प्रत्येक नागरिक के जीवन स्तर को वे ऊंचा करना चाहते थे और अपने जीवन का एक एक क्षण उन्होंने अपने कार्यकाल में इन चीजों के निर्माण करने में लगाया। जब तक ये संस्थायें कायम रहेंगी कोई भी पंडित गोविन्द वल्लभ पंत को नहीं भूल सकता। आगे आने वाली हमारे प्रदेश की संतानें, हमारे देश के नवयुवक उनकी स्मृति को सदा अपनी नजर के सामने रखेंगे, जब जब ये संस्थायें इस देश के निवासियों की सेवा करती हुई उनकी नजरों के सामने गुजरती दिखायी देंगी।

१९५५ तक, जब तक वे इस प्रदेश के मुख्य मंत्री रहे, इस प्रदेश के सामाजिक जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिस पर उन्होंने अपनी छाप न डाली हो। हम में से बहुतों को जो इधर और उधर बैठे हैं उनमें से बहुतों को अपने जीवन के द्वारा और अपनी दीक्षा के द्वारा उधर चलने में बल दिया है जहां चल कर हम आज जो बने हैं और हैं, वह उनकी कृपा के कारण है। वह सब हम नवयुवकों के लिये उनकी देन है। ऐसा महान् व्यक्ति जिसने इस प्रदेश के जीवन में,

[श्री चन्द्रभानु गुप्त]

सामाजिक जीवन में, आर्थिक जीवन में, राजनीतिक जीवन में अपने कार्यों के द्वारा सदा प्रगतिशीलता की तरफ चलने की चेष्टा की है, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता है। भले ही उसका नश्वर शरीर हमारी नजरों के सामने से ओझल हो जावे, परन्तु उसकी कृतियां, उसके विश्वास तथा उसकी धारणायें सदा जगमगाती रहेंगी और देश और प्रदेश के निवासियों को उधर चलने की तरफ प्रेरित करती रहेंगी जहां चल कर हम इस देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर सकते हैं और इस देश की सदियों से खोयी हुई आजादी को जिसे हमने अभी प्राप्त किया है, उसे अधिक रूप में कंसोलिडेट कर सकते हैं।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य के नाते, इस देश के गृह मंत्री के नाते जो जो घटनायें उनके कार्यकाल में घटी हैं, वे ऐसी घटनायें हैं जो हमारी नजरों के सामने से गुजरी हैं उनका भी उन्होंने मुकाबला किया है और राजनीति में उन्होंने सदा वास्तविकता का दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया है। वे महज किताब पढ़ कर चन्द आदर्शों की बातों के पीछे चलने वाले व्यक्ति नहीं थे परन्तु वे ऐसे व्यक्ति थे जो आदर्शवादिता और व्यावहारिकता को सम्मिलित करके उधर चलने की चेष्टा करना चाहते थे जिससे विचारों में संतुलन ला सकें और संतुलित विचारों द्वारा अधिक मात्रा में उन कार्यों की पूर्ति कर सकें जो उनकी जिम्मेदारी थी और जिन्हें पूरा करना वे अपना कर्त्तव्य समझते थे।

आज ऐसा महान् व्यक्ति जो इन तमाम गुणों से विभूषित था वह हमारे बीच से चला गया। उनका सादगी का जीवन था और जनता की गाढ़ी कमाई के एक एक पैसे का संरक्षण जिस तरह से वह करना चाहते थे कि वे हम सब को एक सबक दे कर गये हैं, हमको दीक्षा देकर गये हैं, हमको रास्ता बतला कर गये हैं कि हम जो आज विभिन्न ऊंचे-ऊंचे स्थानों पर बैठे हुये हैं, वे उस जनता की गाढ़ी कमाई के रुपये के कस्टोडियन हैं। अपने कार्यकाल में उन्होंने अपनी जानकारी में कभी भी एक पैसे का अपव्यय होने नहीं दिया और इस पर इतना देख-रेख रखते थे कि वह देख-रेख एक सबक है ऐडमिनिस्ट्रेशन के लिये, राजनीतिज्ञों के लिये और कार्यकर्त्ताओं के लिये।

कहां तक उस महान् व्यक्ति के गुणों का आज परिचय दिया जाय। इस सदन में बैठने वालों को उन गुणों का परिचय देने की आवश्यकता भी नहीं है, क्योंकि इस सदन का प्रत्येक सदस्य उन गुणों से भली-भांति परिचित है और जैसा कि मैंने अभी कहा कि बहुतों ने उनसे जीवन में दीक्षा लेकर उन गुणों को अपने जीवन में जगह देने का प्रयास किया है। पंडित गोविन्द वल्लभ पंत आज हमारे बीच में नहीं रहे, उनकी स्मृति ही अब हमारे बीच में रहेगी। हम उनका आदर करते थे, उनका सत्कार करते थे, उनसे प्रेम करते थे। उनके निधन ने हम सब पर एक उत्तरदायित्व डाला है, चाहे मेरे पीछे बैठने वाले साथी हों, चाहे सामने बैठने वाले साथी हों। उनके जीवन का प्रत्येक पन्ना हमें कुछ न कुछ सबक देता है, हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन पन्नों को अपने जीवन में जगह देने का प्रयास करें और पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी के उत्थान के सम्बन्ध में अपने अन्दर उन गुणों को लाने की चेष्टा करें जिनसे पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी विकसित होगी और सही परम्परायें हमारे देशवासियों के बीच में फैल सकेंगी।

अध्यक्ष महोदय, मैं अधिक समय इस सदन का न लेते हुये अपनी श्रद्धांजलि उस सद्पुरुष तथा देश के महान् नेता के प्रति अर्पित करता हूं और इस सदन की समवेदना आप के द्वारा पूज्य पंत जी के घर वालों को भिजवाना चाहता हूं और साथ में ही, मैं इस देश के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के पास भी यह समवेदना भिजवाना चाहता हूं। आज पंडित जवाहरलाल नेहरू का एक बहुत बड़ा साथी, एक बहुत बड़ा सहायक और सहायता करने वाला व्यक्ति हमारे बीच से उठ गया, वह व्यक्ति जो एक महान् शक्ति का स्रोत था, विचारों का स्रोत था, वह जो उन गुणों का स्रोत था जिनका वर्णन थोड़े शब्दों में मैंने सदन के समक्ष किया है। मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि इस सदन की समवेदना इस महान व्यक्ति के निधन के कारण जो क्षति आज देश को पहुंची है, वह उनके घर वालों तक पहुंचाई जाय और मैं आप से यह प्रार्थना करता हूं कि यह सदन आज अपनी कार्यवाही उन की स्मृति में बन्द कर दे। हम सभी

लोगों की यही आकांक्षा है कि उस महान् नेता की आत्मा को शांति मिले, परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना है। मुझे अधिक न कहते हुये फिर से उस महान पुरुष के प्रति यही निवेदन करना है कि वह आज हमारे बीच से अवश्य चला गया परन्तु जिन आदर्शों, स्मृतियों तथा पद-चिन्हों को वह हमारे बीच में छोड़ गया है वे सदैव ही हमें आगे चलाने के लिये प्रेरित करते रहेंगे और उधर चलने के लिये प्रेरित करते रहेंगे जिधर वह चला और चलकर त्याग और सेवा का जीवन बिताकर चला गया। मैं आप से इन चन्द शब्दों के साथ इस सदन की समवेदना उनके घर वालों तक भिजवाने की प्रार्थना पुनः करता हूं।

श्री त्रिलोकीसिंह (जिला लखनऊ)—मान्यवर, आज इस देश के लिये महान् दुख का दिन है। पंत जी केवल कांग्रेस के ही एक नेता नहीं थे बल्कि समस्त देश के लिए एक बहुत बड़ा सहारा थे। पिछले ३५ साल के इतिहास को यदि देखा जाय तो इस देश में राजनीतिक चेतना तथा सामाजिक चेतना को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में पूज्य पंत जी का विशेष हाथ था। वह जहां भी जिस क्षेत्र में भी रहे सब से आगे रहे। विद्यार्थी जीवन में, जिले के स्तर पर, वकालत में, उत्तर प्रदेश लेजिस्लेटिव कौंसिल में, सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में, फिर इस विधान सभा में अथवा राज्य सभा में जहां के कि वह सदस्य थे हर जगह उनका शुमार हमेशा उच्च कोटि के व्यक्तियों में रहा।

अंग्रेजी में, मान्यवर, जैसा कहा जाता है, वह जहां पर भी रहे हैड आफ दि टेबिल थे। जहां बैठ गये वहां जंचते थे और छा जाते थे। किसी देश में भी ऐसे व्यक्ति कम होते हैं। हमारे देश में तो विशेषकर ऐसे व्यक्तियों की कमी है। ऐसे समय में पंत जी का न रहना हमारे लिये बड़े दुर्भाग्य की बात है। उनके शरीर का अन्त हुआ, पिछले कई दिनों से सारा देश परेशान था, किसी घड़ी किसी समय भी यह घटना हो सकती थी, ऐसी सम्भावना थी। किन्तु उनके न रहने से जो जिम्मेदारी इस देश के ऊपर आई है उसको निभाना, मान्यवर, इस देश के सभी नागरिकों का कर्त्तव्य है। उनके सम्बन्ध में जो विचार माननीय नेता सदन ने प्रकट किये हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं और मान्यवर से प्रार्थना करता हूं कि मेरी और इस ओर के बैठने वाले अन्य माननीय सदस्यों की समवेदना उनके दुखी परिवार को पहुंचाने की कृपा करें।

श्री मोतीलाल अवस्थी (जिला कानपुर)—माननीय अध्यक्ष महोदय, आज श्री गोविन्द वल्लभ पन्त जी क निधन के अवसर पर जो हमारे नेता सदन ने और नेता पी० एस० पी० ने अपने उद्गार प्रकट किये उन सबसे सम्बद्ध करते हुए मैं अपनी पार्टी की ओर से, अपने नेता की ओर से और अपनी ओर से समवेदना प्रकट करता हूं। मुझे श्री पंत जी से उस हालत में सम्पर्क रहा जब तक कि मैं स्वयं कांग्रेस में रहा। सन् १९५० तक जब-जब वह कानपुर आये, तिलक हाल में गये, मुझे अवसर मिलता रहा कि मैं उनके सम्पर्क में किसी रूप में आऊं, उनके भाषण आदि सुनूं। हमारे मुख्य मंत्री जी ने जो उनके सम्बन्ध में हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात कही उसके साथ मैं भी अपने को सम्बद्ध करता हुआ यह उल्लेख कर दूं कि हमारे कानपुर में अमर शहीद श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये अपने प्राण न्योछावर किये, उनके प्रति हमारे पंत जी का बहुत प्रेम रहा। श्री गणेशशंकर जी विद्यार्थी द्वारा संचालित गणेश आश्रम जो नरवल ग्राम में है, जिससे मेरा सम्पर्क प्रारम्भ से रहा, उस संस्था द्वारा उन्हें हम लोगों ने बार-बार निमंत्रित किया और कस्तूरबा गांधी निधि के द्वारा संचालित उस आश्रम के उद्घाटन आदि के सिलसिले में मेरे और मेरे सहयोगियों द्वारा आमंत्रित किये जाने पर कई बार वे आए और मुझे उनके निकट सम्पर्क में आने का मौका मिला। जहां तक मैं समझ पाया, देख पाया, महसूस कर पाया, उनमें वे सभी गुण जिस रूप में हमारे मुख्य मंत्री जी ने बताये, मुझे दिखाई पड़े। मैंने जीवन में उनसे बहुत कुछ बातें सीखीं। मुझे यदि उनके निकट बैठने का मौका नहीं मिला तो हमारी पार्टी के अन्य सदस्यों को, श्री देवनारायण भारतीय आदि को, उनके निकट विधाई कार्य में बैठने का मौका मिला है और उनके गुणों से सभी लोग परिचित हैं। उनके परिवार के प्रति पूर्ण समवेदना प्रकट करते हुये, उनकी मृत आत्मा के लिये ईश्वर से शांति की प्रार्थना करते हुए, आज मेरा दुःखद सौभाग्य है कि उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित

[श्री मोतीलाल अवस्थी]

करने का मौका लूं। श्री पंत जी हमारे बीच से चले गये हैं, लेकिन बहुत-सी ऐसी बातें छोड़ गये हैं जिनको हम सतत याद रखेंगे। जब तक हमारे प्रदेश में वह मुख्य मंत्री के रूप में रहे उन्होंने कुछ ऐसी चीजें हमें दीं जिनको हम और हमारे पक्ष के सभी लोग याद रखेंगे। अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जो बातें कही गई है उनके साथ मैं अपने आप को सम्बद्ध करता हूं।

*श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल (जिला आगरा)---माननीय अध्यक्ष महोदय, इस मृत्युलोक में पार्थिव शरीर की दृष्टि से अमर कोई नहीं है। प्रत्येक देहधारी का देहावसान अवश्यम्भावी है, परन्तु कुछ महान् व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनका निधन उनके विरोधियों कोभी अपने ऊपर वज्रपात-सा दिखाई देता है। पंत जी हमारे देश और प्रदेश के ऐसे ही महान् व्यक्तियों में से थे। हमारे प्रदेश के मुख्य मंत्री ने और विरोधी दल के नेता तथा सोशलिस्ट पार्टी के नेता ने उनकी सेवाओं, उनके बलिदानों और उनके गुणगनों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं।

मेरा उनका परिचय पहले पहल १९२४ में हुआ जब हम सब उन दिनों में स्वराज्य पार्टी की ओर से तत्कालीन लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्य चुने गये थे। १९२४ के अन्त में ही वह पार्टी के नेता चुने गये और उनके नेतृत्व में मुझे उस पार्टी के प्रचार और संगठन मंत्री की हैसियत से काम करने का अवसर मिला। १९२५ में अलीगढ़ में जब कांग्रेस की राजनीतिक मीटिंग हुई तब उस समय भी उसी पंडाल में किसानों और मजदूरों की प्रादेशिक कान्फ्रेंस की अध्यक्षता करनी पड़ी। इस तरह साथ-साथ काम करते-करते कालान्तर में हमारा प्रगाढ़ परिचय प्रगाढ़ मैत्री में परिणत हो गया जो १९४९ तक बराबर कायम रहा। मुझे उनके ऊपर पूर्ण श्रद्धा थी और वह भी मेरे ऊपर पूर्ण विश्वास करते थे। मुझे इस बात का दुख है कि जीवन में भी और सत्ता की राजनीति में भी आदमी अपने पराये हो जाते हैं। हम भी एक दूसरे के राजनीतिक विरोधी हुए, लेकिन उस महान् व्यक्ति के प्रति न्याय करने के लिये मैं यह कह देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं कि १२ वर्षों के विरोध में भी मुझे कभी इस बात की सूचना नहीं मिली कि उन्होंने मेरी निन्दा तो दूर आलोचना भी की हो। मेरे विरुद्ध चुनाव सभाओं में वह आकर भाषण देते थे, लेकिन मेरी आलोचना में उन्होंने कभी भी एक शब्द नहीं कहा। तो मेरे लिये उनका निधन राजनीतिक विरोध होते हुए भी एक बड़े भाई और मित्र की दृष्टि से विशेष रूप से आघात है जिसको मेरे लिये सहन करना मुश्किल है। कभी-कभी तो इन दिनों में इस प्रकार से देहावसान हुए हैं जिनसे मैं अनुभव करता हूं कि हमारे साथी छोड़-छोड़ कर जा रहे हैं चाहे विरोधी हों, चाहे हमारे विचारों से सहमत हों। तो मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से पंत जी के परिवार के प्रति सच्ची समवेदना प्रकट करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की श्रद्धांजलि और समवेदना उनके सन्तप्त परिवार तक पहुंचा दें।

श्री मलिखानसिंह (जिला मैनपुरी)---अध्यक्ष महोदय, आज कितने दुःख का विषय है यह तो हम स्पष्ट देखते हैं कि हमारे बीच का प्रत्येक कार्यकर्त्ता जो पंत जी के साथ जेल गया है और जिनका उनसे साथ रहा होगा उनके चेहरे देख कर मैं कल्पना करता हूं जैसे परिवार का कोई व्यक्ति हमारे बीच से चला गया, कितने सहवेदना का विषय है। यही नहीं देश के राष्ट्र नायक तथा नेताओं में काम करने के लिये हर एक क्षेत्र में जिन व्यक्तियों ने जो जो योगदान दिया उसमें हमारे पंत जी का प्रमुख हाथ रहा। मैं उनके जीवन के बारे में ज्यादा न कहते हुये इतना ही कहूंगा कि उनका राजनीतिक जीवन सन् १९१६ से है और मेरा जन्म सन् १९३० का है। इस कारण उनके कार्य जो हम लोगों ने देखे उसी के आधार पर तथा जो पढ़े हैं उससे हम लोग कल्पना कर सकते हैं कि इस देश के लिये उनका कितना कार्य था, कितना त्याग था और उनका कितना योगदान रहा है इस देश की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये, जिससे इस तरह की चेतना

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पैदा हुई । जिस अंग्रेज के खिलाफ लोग गोलियों से, उनकी बौछारों से डरते थे उसका मुकाबला करने के लिये इस राष्ट्र में जिसने चेतना पैदा की हो, ऐसे एक-एक व्यक्ति का हमारे बीच से उठ कर जाना हमारे देश के लिये बड़े दुर्भाग्य का विषय है और आज की स्थिति में जब कि चारों तरफ से हम यह देख रहे हैं कि हमारा देश एक संकटकालीन स्थिति से गुजर रहा है, चाहे उत्तर से ले लें, चाहे पूर्व से ले लें और चाहे पश्चिम से ले लें, ऐसे समय में नेहरू जी को ठोस सलाह देने वाले तथा मार्ग दर्शन कराने वाले पंत जी हमारे बीच में नहीं रहे, यह बड़े दुर्भाग्य का विषय है । मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से माननीय नेता सदन और नेता विरोधी दल या अन्य अन्य दल के नेताओं ने जो भी शब्द माननीय पंत जी के लिये कहे उनसे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि हमारी सब की समवेदना उनके दुखी परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री झारखंडेराय (जिला आजमगढ़)--मान्यवर, जिस बात की आशंका पिछले दो सप्ताह से देश के प्रत्येक निवासी को हो रही थी वह दुखद घटना आज हमारे बीच में हो ही गयी और आज हमारे बीच से राष्ट्रीय आन्दोलन का एक महारथी, महान् योद्धा और स्वतंत्रता सैनिकों का पितामह उठ गया । वे अद्वितीय गम्भीर राजनीतिज्ञ थे । ऐसा लगता था कि स्वर्गीय सरदार वल्लभ भाई पटेल की मृत्यु के पश्चात् राष्ट्रीय जीवन में जो जगह खाली हुई वह भर गई थी, लेकिन आज पंत जी के निधन से वह जगह फिर खाली हो गयी । कौन व्यक्ति वह रिक्त स्थान भरेगा, कैसे भरी जायगी यह हमारे राष्ट्रीय जीवन की एक समस्या अब बन गयी है । उनका सारा जीवन हमारे देश के राष्ट्रीय आन्दोलन के महान गौरवमय इतिहास से अलग कर के देखा नहीं जा सकता । ऐसा लगता है कि राष्ट्र नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू की आज दाहिनी भुजा टूट गई । आज हमारा देश स्वतंत्रता के बाद एक नाजुक दौर से गुजर रहा है । नवअर्जित स्वतंत्रता को मजबूत करना, उसे प्रत्येक प्रकार के खतर स बचाना है, विकास के पथ पर देश को तेजी से अग्रसर करना है, ऐसे समय इस प्रकार के व्यक्तियों का एक के बाद दूसरे का उठते जाना नितान्त दुख का विषय ह, एसा लगता है राष्ट्रीय नताओं की अगली पक्ति खाली होती जा रही है । एक आशंका है कि नये कौन लोग आयेंगे, कौन लोग भरेंगे ? देश में ऐसी शक्तियां भी हैं जो देश की एकता को शायद तोड़ देना चाहती हों, ऐसे समय जब पूरे देश की राष्ट्रीय एकता हमारा महान् लक्ष्य है तो ऐसे लोगों की कमी और अखरेगी और महसूस होगी । उनके जीवन के विषय में नेता सदन ने जो विचार व्यक्त किये हैं उनसे मैं सहमत हूं । मुझे वह दिन याद आता है जब काकोरी क्रान्तिकारी षड़यंत्र केस जो हमारे प्रदेश का ही नहीं, देश का एक बहुत बड़ा षड़यंत्र केस था उसके वे मुख्य वकील थे और आज के हमारे मुख्य मंत्री उनके जूनियर वकील की हैसियत से उनका सहारा थे । उस काकोरी षड़यंत्र वालों को फांसी के तख्ते से, काला पानी की काल कोठरियों से बचाने के लिये उन्होंने कुछ उठा नहीं रखा था और एक युग के बाद १९३८ में उनको जेल से छुटाने के लिये भी कुछ उठा नहीं रखा । इसकी चर्चा माननीय मुख्य मंत्री ने कर दी है । वे राष्ट्रीय कांग्रेस की एक विशिष्ट चिन्तन धारा के प्रमुख प्रवक्ता अनेक अवसरों पर रहे हैं । हम सब इससे परिचित हैं । त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन या दूसरे ऐसे राष्ट्रीय आन्दोलनों के मोड़ के अवसरों पर वे एक विशेष विचार धारा के मुख्य प्रवक्ता के रूप में आये । उनके निधन से जो देश की अपूर्णीय क्षति हुई है निकट भविष्य में वह पूरी होती दीखती नहीं । मेरा उनका आध्यात्मिक परिचय मैं कहूं सब से पहले अखबार के पन्नों से हुआ । जब लखनऊ में साइमन कमीशन का विरोध करते हुये उन्होंने लाठियों की बौछार सही हम छोटे बच्चे थे, अखबार पढ़ने की आदत थी, तो मेरा उनका इसी प्रकार से परिचय हुआ । प्रत्यक्ष दर्शन मुझे याद है, १९३८ में या सम्भवतः १९३९ में बलिया जिले की पोलिटिकल कान्फ्रेन्स मिलकी नाम के स्थान पर दोआबा में हो रही थी वहां मैंने सबसे पहले उनके दर्शन किये थ । तब निकट से बातें भी हुई थीं उसके बाद अनेक अवसर आये । इस सदन में जब मैं आया तब से उनके निकट सम्पर्क में आने के, उनके गुणगानों की अनुभूति के, उनकी विद्वता की जानकारी के, उनकी गम्भीरता के एहसास के अनेक अवसर मिले । उसकी सब चर्चा कौन किसको यहां सुनाये । जो यहां पुराने सदस्य

[श्री झारखंडे राय]

हैं वे सब उससे परिचित हैं। क्या किसको सुनाना है और किसको क्या सुनना है अब तो सब कुछ अनुभव ही करना है।

माननीय, एक विशिष्ट व्यक्ति हमारे बीच से आज उठ गये। अन्त में मैं बहुत कुछ न कह कर जो अन्य भाव यहां व्यक्त किये गये हैं उन सब से अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और आपसे क्या प्रार्थना करूं लेकिन परम्परा है, जब राष्ट्रीय शोक है, राष्ट्र का हर नर-नारी शोक से विह्वल है तो किस को कौन मनाये और कौन किस को सान्त्वना दे, लेकिन परम्परा के अनुसार मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप हमारी और हमारे दल की समवेदना उनके संतप्त परिवार वालों तक पहुंचाने की कृपा करें। इन शब्दों के साथ मैं उनके चरणों में, उनकी स्मृति में अपनी और अपने दल की श्रद्धा की तुच्छ भेंट अर्पित करता हूं।

श्री अध्यक्ष--पूज्य पंतजी का स्वर्गवास हो जाने पर नेता सदन तथा अन्य दलों के नेताओं ने अपने दलों की ओर से, यानी पूरे सदन की ओर से जो भावनायें व्यक्त की हैं उनसे मैं अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। नेता सदन ने उनके सार्वजनिक कार्यों और उनके गुणों का बहुत संक्षेप में लेकिन कुछ व्योरे से वर्णन किया है। मैं भी उनसे सहमत हूं। वे हमारे देश की जो सच्ची संस्कृति है उसके एक उच्चकोटि के प्रतीक थे, ऐसा मैं समझता हूं। बहुत दफ़ा लोग यह कहते ह कि राजनीति में जो व्यक्ति पड़ता है उसमें नतिकता या सच्चाई की गुंजायश कहां। मैं उनसे उनके कार्यों से वर्षों स परिचित रहा हूं और मिलकर उनके साथ कार्य भी किया है। जब जब किसी विषय पर उनको निर्णय करना पड़ता था तो पहली बात मैं उनसे यह सुनता था कि यह उचित है या अनुचित है, यह सच्चाई पर आधारित है, या नहीं, कहीं असत्य बात तो नहीं हो जायगी उस बात का वह पहले खयाल करते थे और औचित्य हर चीज़ का नैतिक कसौटी पर कसते थे तब कार्य करते थे। जो व्यक्ति इस तरह से छानबीन करे तो मैं समझता हूं कि दुनिया का अनुभव यह है कि वही कुशाग्र बद्धि और दूरंदेश हुआ करता है। जो अवसरवादी होता है वह कुशाग्र बुद्धि नहीं होता और यही कारण है कि उनके जीवन में आप देखेंगे जहां कहीं भी उन्होंने कार्य किया चाहे वकालत में हो, चाहे विद्यार्थी जीवन में क्यों न हों, चाहे उसके बाद राजनीति के क्षेत्र में क्यों न हो, हर जगह उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। यह उनका चरित्र था और उनकी प्रतिभा सम्पन्न बुद्धि तो परमात्मा की देन थी। ऐसी तीव्र बुद्धि हर एक को वैसे प्राप्त नहीं होती बल्कि ईश्वर प्रदत्त हुआ करती है, ऐसी तीव्र बुद्धि और मस्तिष्क का सदुपयोग भी होता है और दुरुपयोग भी होता है, जो व्यक्ति उसका सदुपयोग करे और अपने चरित्र को ऊंचा उठा ले वह पंत जी की तरह आदर्श पुरुष हो सकता है।

वह जिस क्षेत्र में चले उस क्षेत्र में उनकी छाप ज़रूर पड़ी। यही कारण है कि जब वह मोतीलाल नेहरू जी के साथ थे तो उनके दाहिने हाथ थे। अगर मोतीलाल जी लीडर थे तो यह डिप्टी-लीडर थे। गांधी जी के साथ बहुत से कांग्रेस के प्रस्तावों को बनाने में जो कुशलता उन्होंने दिखाई और वास्तविकता को सामने रख कर प्रस्तावों को मूर्त रूप देने के लिये जो सुझाव दिये, उनकी अगर कथा सुनाई जाय तो मैं समझता हूं कि एक बहुत लम्बी कहानी हो जायगी। लेकिन हर कोई जानता है कि कांग्रेस के जो अच्छे प्रस्ताव हुये हैं उन पर पंडित गोविन्द वल्लभ पंत जी की छाप रही है क्योंकि उनके बारे में सब को यह मालूम था कि जितनी स्पष्टता उनके विचारों में दिखाई देती है वैसी मैं समझता हूं कि किसी के भी भाषण में या विचार में स्पष्टता नहीं दिखाई देती थी। यही कारण था कि विरोधियों को भी वह अपनी ओर खींच लिया करते थे क्योंकि स्पष्ट विचार उनके स्वयं होते थे और उन्हें स्पष्ट रूप देने में भाषा भी उनके पास मौजूद थी जिससे उनके विचार दूसरों को हृदयंगम हो सकें।

ऐसा व्यक्ति जिसने हर क्षेत्र में बड़ा भारी कार्य किया है और जिसने यहां के गणतंत्र की नींव रखी और उस को मजबूत बनाया है, उसके चले जाने से हम सभी लोगों को दुख होना स्वाभाविक है। उनकी सौजन्यता और उनका हर व्यक्ति के ऊपर प्रेम प्रसिद्ध था जिसकी वजह से हर व्यक्ति को अहसास होता था कि पंत जी हमारे घर के, रिश्तेदार और बुजुर्ग हैं, ऐसे

व्यक्ति के चले जाने से और अधिक दुख होना स्वाभाविक है। लेकिन एक बात मैं अवश्य कहूंगा कि और किसी का जीवन सुफल इतना हो या न हो, लेकिन उनका जीवन सब क्षेत्रों में, किसी पर भी आप नजर डालें, एक सुफल जीवन रहा है और वह हमेशा हमको प्रेरणा देता रहेगा और मार्गदर्शक रहेगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये हम सब ने प्रयत्न किया और हमने अपने यहां गणतन्त्र कायम किया। हमारे देश के ही दो हिस्से हो गये। जो दूसरा हिस्सा है उसमें गणतंत्र की आवाज तो लगी लेकिन वहां गणतंत्र मौजूद नहीं है। अड़ोस-पड़ोस के देशों में भी स्वतंत्रता की लहर फैली, राष्ट्रीयता की भावना और चेतना बढ़ी और वह भी स्वतंत्र हो गये, जैसे बरमा है, और भी देश स्वतंत्र होते चले जा रहे हैं। लेकिन जनतांत्रिक पद्धति को स्थायी बनाना, उसके प्रति लोगों में श्रद्धा उत्पन्न करना, उसको मजबूत पाये पर खड़ा करना, स्वतंत्रता के बाद कोई आसान चीज नहीं हुआ करती है। अगर सब से महत्वपूर्ण कार्य इस दिशा में किसी ने किया है तो वह माननीय गोविन्द वल्लभ पंत हैं। वही एक व्यक्ति हैं जिसने हमारे यहां की पार्लियामेंटरी पद्धति को मजबूत बनाया। प्रारम्भ से ही, जिस समय वह यहां की कौंसिल में थे तभी से उन्होंने पार्लियामेंटरी पद्धति को मजबूत करने का प्रयत्न किया। जब हमको स्वतंत्रता मिली तो उसी पद्धति को ऐसा मजबूत बना दिया कि उसका हमारे देश में उखड़ना सम्भव नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे महान् पुरुष की कृति, यद्यपि वह हमारे बीच से चले गये, और शायद उनकी जगह की पूर्ति हम न भी कर सकें, लेकिन सामूहिक श्रद्धा उन्होंने जनतंत्र के प्रति जो समाज में कायम कर दी है और इस तरह से जनतंत्र का पाया मजबूत कर दिया है वह हमको आगे भी सही रास्ता दिखाता रहेगा, हम उससे विचलित नहीं हो सकेंगे, और इस तरह की परिस्थिति हमारे यहां कभी भी उत्पन्न नहीं होगी जिसमें यहां तानाशाही कायम हो या यहां पर फिर से अत्याचार प्रारम्भ हो सके और वैयक्तिक स्वतंत्रता नष्ट करने में कोई सफल हो सके। ऐसे महान् पुरुष का जीवन हमारे लिए हमेशा प्रेरणा देने वाला होगा। इसीलिये मैं कहता हूं कि उनका जीवन सुफल रहा है। उससे हम हमेशा प्रेरणा प्राप्त करते रहेंगे। उनका पार्थिव शरीर चाहे नष्ट हो गया हो, लेकिन हमारे बीच में अभी भी वह अपनी कृतियों द्वारा, स्वभाव द्वारा, जो प्रेम उन्होंने हम लोगों के बीच में फैलाया, जिसके कारण हमारा देश एक बना रहा, उस रूप में वह हमेशा हमारे बीच में जिन्दा रहेंगे और हमारे देश की इंटेग्रिटी या एकता अक्षुण्ण रहेगी। यह मुझे पूर्ण विश्वास है।

मैं अधिक न कह कर, आपने जो भावनायें यहां व्यक्त की हैं उनके साथ अपने को सम्बद्ध करते हुए, उनके दुखी परिवार को वैसे तो हम सभी उस दुखी परिवार में से ही हैं, लेकिन संसार की दृष्टि से एक संकुचित परिवार को परिवार कहते हैं, जो उनके पुत्र और सम्बन्धी हैं। उनके पास इस सदन की समवेदना भेज दूंगा और जैसा नेता सदन ने कहा है कि हमारे जो प्राइम मिनिस्टर हैं जिनके ऊपर उनके जाने से बड़ा भारी बोझ पड़ा है उनके पास भी मैं इस सदन की समवेदना से अवश्य भेज दूंगा क्योंकि यह राष्ट्र के ऊपर संकट पड़ा है और राष्ट्र का जो नायक है उस को जो समवेदना हम भेजेंगे उस समवेदना से उसे भी बहुत कुछ सहारा और शक्ति प्राप्त हो सकती है।

अब हम उठें और परमात्मा से प्रार्थना करें दो मिनट कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(सब सदस्य अपने-अपने स्थान पर दो मिनट के लिये खड़े हुए)

श्री अध्यक्ष---अब आज की कार्यवाही समाप्त होती है। कल हम ११ बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन १२ बज कर ७ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

देवकी नन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ;
७ मार्च, १९६१।

पी० एस० यू० पी०--ए० पी०--२९४ एल० ए०--१९६१--८४५।